वन अनुसंधान संस्थान में मनाया गया हिंदी पखवाड़ा

संस्थान में 14 से 29 सितंबर तक हिंदी अनुभाग के सौजन्य से हिंदी पखवाड़े का आयोजन किया गया। इस दौरान हिंदी निबंध, हिन्दी टंकण, प्रारूप एवं टिप्पण लेखन प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया, जिसमें संस्थान के कार्मिकों ने बढ़-चढ़कर सहभागिता की। पखवाड़े का समापन दिनांक 30 सितंबर, 2022 को आयोजित राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक के दौरान पुरस्कार वितरण के साथ किया गया। डॉ. रेनू सिंह , निदेशक , वन अनुसंधान संस्थान महोदया के अध्यक्षता में आयोजित बैठक में विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार एवं प्रशस्ति पत्र वितरण किए गए। कार्यक्रम में विभिन्न प्रतियोगिताओं के निर्णायक मण्डल के सदस्य और पुरस्कार विजेता प्रतिभागी भी उपस्थित थें। कार्यक्रम का शुभारंभ श्री एस. के. थॉमस, कुलसचिव महोदया के स्वागत भाषण से किया गया। पुरस्कार वितरण के उपरांत निदेशक महोदया डॉ. रेनू सिंह जी ने सभी प्रतिभागियों के उत्साह की सराहना की और उन्हें प्रेरित करते हुए ज्यादा से ज्यादा अपना कार्य राजभाषा हिन्दी में प्रोत्साहित किया।

हिंदी पखवाड़े के दौरान आयोजित निबंध प्रतियोगिता में श्री दिग्विजय राणा , श्री गौरव नेगी, श्री नितीश मठपाल एवं श्री राजू आर्य को पुरस्कार एवं प्रशस्ति पत्र से सम्मानित किया गया । हिंदी टंकण प्रतियोगिता में श्री सुधीर सिंह बिष्ट , कु. कीर्ति रावत, श्रीमती चंद्रप्रभा एवं श्री भवानी दत्त बड़ोला विजेता रहें। हिंदी टिप्पण एवं प्रारूप लेखन प्रतियोगिता में श्री नितीश मठपाल, श्री रुद्रदेव शर्मा, श्री गौरव नेगी तथा कु. कीर्ति रावत को पुरस्कार प्राप्त हुआ।

इस दौरान वित्तीय वर्ष 2021-22 की अवधि में निरंतर हिन्दी कार्यान्वयन में उत्कृष्ट प्रगति करने वाले अनुसंधान कार्यालयों की श्रेणी में वन पारिस्थितिकी एवं जलवायु परिवर्तन प्रभाग एवं वन आनुवंशिकी एवं वृक्ष सुधार प्रभाग संयुक्त रूप से तथा प्रशासनिक कार्यालय की श्रेणी में वन अनुसंधान संस्थान सम विश्वविद्यालय कार्यालय को शील्ड एवं प्रशस्ति पत्र से सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम के अंत में संचालक श्री शंकर शर्मा, सहायक निदेशक (राजभाषा) ने सभी प्रतियोगियों का आभार व्यक्त किया।

<u>पखवाड़े के दौरान आयोजित कार्यक्रमों की कुछ झलकियाँ</u>

हिंदी पखवाड़ा
14 सितम्बर से 29 सितम्बर 2022
आयोजक : हिंदी अनुभाग

हिंदी पखवाड़ा
"निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल,
बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल"
भारतेंदु हरिश्चंद